



परोपकारी बीवी-1

“हमारे बाजू वाले क्वाटर में रहने वाले सज्जन पीसी मैसी मेरे ही डिविजन में काम करते हैं। वे अपनी पत्नी के साथ अक्सर मेरे घर आते और फिर हम चाय, नाश्ता साथ-साथ ही लेते हैं। मैसी जी को शराब पीने और जुआ खेलने की आदत थी। इस कारण अलका बहुत दुखी रहती है। यहां तक कि मैसीजी के वेतन से उनके घर का खर्च भी बहुत मुश्किल से निकल पाता है। ...”

Story By: जवाहर जैन (jawaherjain)

Posted: Thursday, September 8th, 2011

Categories: [इंडियन बीवी की चुदाई](#)

Online version: [परोपकारी बीवी-1](#)

परोपकारी बीवी-1

अन्तर्वासना के सभी पाठकों को मेरा नमस्कार। इससे पहले मैंने आपके सामने पुसी की किस्सी और अपनी सुहागरात की बात रखा। आपने इसे पसंद किया और मुझे कई सुझाव भी दिए इसके लिए धन्यवाद। सुहागरात को कहानी के रूप में देने के बाद हमने उस कहानी को साथ में ही पढ़ा व उन यादों को फिर से दुहराकर अमल में लाया।

बाद में मैंने स्नेहा से पूछा- अब अगली कहानी में अन्तर्वासना के पाठकों को क्या बताएँ ?

तो स्नेहा ने कहा- आपने कई दूसरी लड़कियों के साथ भी सैक्स किया है, उन अनुभवों को बताइए ताकि लोगों को सैक्स का मजा नए रूप में मिल सके और हमारे पाठकों में से महिलाओं या लड़कियों को अपने विवाहित जीवन में पहुँचकर उसका लुत्फ़ उठाने व विवाहित पुरुषों को अपने पार्टनर को किसी भी स्थिति में नीचा न दिखाने की सीख मिल सके।

स्नेहा की बात सुनकर मैंने अपने एक सहकर्मी की पत्नी के साथ स्नेहा के सहयोग से किए सैक्स को कहानी के रूप में आपके सामने रखने का निर्णय लिया।

कहानी शुरू करने से पहले कुछ बातें आपको बता रहा हूँ। मैं गवर्नमेंट प्लांट में नौकरी करता हूँ। प्लांट की ओर से अपने सभी अधिकारी-कर्मचारियों को रहने के लिए क्वार्टर बनाकर दिए गए हैं। मैं ऐसे ही एक क्वार्टर में अपनी स्नेहा के साथ रहता हूँ। मुझे जो वेतन मिलता है हम उसके दो हिस्से करते हैं, एक हिस्सा स्नेहा को मिलता है, जिससे वह घर का राशन, सब्जी व अन्य जरूरत का सामान लेती है, दूसरे हिस्से से मैं अपना खर्च चलाता हूँ।

यह करीब 2 साल पहले की बात है। हमारे घर के बाजू वाले क्वाटर में रहने वाले सज्जन प्लांट में मेरे ही डिविजन में काम करते हैं। उनका नाम पीसी मैसी है। उनकी एक साल की बेटी भी है। वे अपनी पत्नी के साथ अक्सर मेरे घर आते और फिर हम चाय, नाश्ता साथ-साथ ही लेते हैं।

उनकी पत्नी अलका करीब 30 साल की है। मेरे घर आने पर स्वाभाविक रूप से वो मेरी बीवी स्नेहा के पास चल देती और दोनों की आपसी बातें लंबी चलती। बाद में स्नेहा और अलका बहुत अच्छी सहेलियाँ बन गईं। साथ में बाजार जाना या बीसी में भाग लेना जैसे और कई काम थे, जिसमें इन दोनों की बढ़िया जम गई थी। अच्छी सहेलियाँ होने के कारण दोनों आपस में अपने सुख-दुख भी बांट लेती थी।

मैसी जी को शराब पीने और जुआ खेलने की आदत थी। स्नेहा ने मुझे बताया कि इस कारण अलका बहुत दुखी रहती है। यहां तक कि मैसीजी के वेतन से उनके घर का मासिक खर्च भी बहुत मुश्किल से निकल पाता है। बाजार में उनकी बहुत उधारी भी है और उधारी वसूलने वाले अक्सर उनके घर में भी तकादा करने आ जाते हैं।

मुझे सुनकर दुख तो हुआ, पर मैं क्या कर सकता हूँ, सोचकर हम दूसरी बात करने लगे।

इस बात के दूसरे दिन ही स्नेहा ने मुझे एक लिस्ट दी व बाजार से सब सामान लाने कहा। मैंने लिस्ट में राशन, पेस्ट, साबुन, वाशिंग पाउडर सहित घरेलू उपयोग का सामान देखा, तो बोला- अरे इस बार सब सामान जल्दी खत्म हो गया या यह अगले महीने के लिए है।

स्नेहा बोली- पहले आप सामान तो ले आइए, फिर इस बारे में बात करेंगे।

अब मैंने उससे बाजार के लिए पैसा मांगा तो उसने कहा- इस माह मेरे पास पैसा नहीं है, अभी आप अपने पास से ला दीजिए।

उस दिन मैं स्नेहा को चोदने के मूड में था, मैंने सोचा कि चलो इस काम के बदले में इससे गांड मारने का वादा ले लेते हैं, मैंने कहा- चलो लिस्ट का पूरा सामान ला देता हूँ, पर बदले में मुझे आज गांड मारने देना होगा ?

स्नेहा ने पहले तो बात टाली, फिर बोली- अच्छा, आप सामान ला दीजिए, बदले में आपको चोदने का मौका मिल जाएगा।

सब काम निपटने के बाद मैं रात को स्नेहा से चिपका व कहा- गांड में लगाने के लिए क्रीम तो ला रखो।

स्नेहा बोली- नहीं, आज आप मेरी चूत में ही करिए, आज इसका मूड है।

मैं बोला- वाह सामान लाते समय तो वादा किया था, अब धोखा दे रही हो।

स्नेहा बोली मैंने आपसे कहा था- चोदने का मौका मिलेगा।

मैं बोला- वाह, मुझे तुम्हें चोदने का मौका नहीं चाहिए डार्लिंग, मेरी बीवी हो तुम, जब भी चाहूँ तुम्हें चोद सकता हूँ।

स्नेहा बोली- यह मैंने अपने लिए नहीं बोली थी।

मैं हड़बड़ाया- तब किसके लिए बोली थी ?

मैंने आपको पहले भी बताया है ना कि स्नेहा की कई बातों का सस्पेंस बाद में खुलता है।

स्नेहा बोली- आप पहले मुझे करिए फिर बताती हूँ।

अब मेरा माथा घूम गया कि स्नेहा ने एसा मुझसे क्यों कहा ? किसके लिए कहा ? मैं इन

विचारों में ही पड़ा रहा। स्नेहा मुझे टेंशन में देखकर बोली- क्या बात है ? अब नहीं चोदना है क्या ?

मैं बोला- तुम्हें तो अभी चोदूँगा जान, पर पहले तुम अपनी बात का राज तो खोलो।

स्नेहा बोली- अच्छा आप बताइए कि अलका आपको कैसी लगती है ?

मैंने कहा- कैसी लगती है मतलब ? अच्छी लगती है और वह अच्छी है भी।

स्नेहा बोली- देखिए, मैं आपको एक बात बताती हूँ, ठीक-गलत बाद में आप बताना।

मैं बोला- हूँ !

स्नेहा बोली- ये मैसी साहब ना रोज शराब पीकर आते हैं। इस कारण उनके घर का बजट बिगड़ा रहता है, यह अलग बात है पर शराब के नशे में ही वो अलका से भी मारपीट करते हैं और करीब-करीब रोज ही उसकी गांड मारते हैं।

मैं बोला- तो क्या हुआ। बच्चा होने के बाद चूत ढीली पड़ जाती है। इसलिए मैसी जी अलका की गांड मारते होंगे, इसमें क्या हुआ।

स्नेहा बोली- अलका को भी अपनी गांड मरवाने से तकलीफ नहीं है, उसको तकलीफ इस बात से है कि मैसीजी सैक्स में खाली अपना सुख देखते हैं, अलका की जरूरत नहीं समझते।

मैं बोला- मैसीजी अलका की कौन सी जरूरत नहीं समझते ?

स्नेहा बोली- आखिर औरत की भी कभी इच्छा होती है।

मैं बोला- मतलब ?

स्नेहा बोली- जैसे आपका मूड बना, आपने मुझसे कहा तो मैंने कहा कि नहीं मुझे आज अपनी चूत का माल भी झड़ाना है। अब आप इस बात पर ही अड़े रहते कि मुझे तेरी गांड ही मारनी है, तो मैं अपनी इच्छा को मारकर पलटकर सो जाती और आप आकर मेरी गांड मार लेते। इससे आपकी मनमर्जी तो पूरी हो जाती, पर मुझे आपका लौड़ा अपनी चूत में लेने की जो इच्छा हो रही है वह धरी रह जाती ना। आपका खड़ा हुआ तब आपने मेरी गांड में लौड़ा डालकर अपना लंड तो शांत कर लिया पर इधर मेरी चूत में जो आग लगी है, वह कैसे शांत होगी ? अब अपनी चूत की आग शांत करने मुझे तो भटकना पड़ेगा ना ?

मैं बोला- अरे यार, इतने दिनों के बाद आज तुझे गांड मारने को बोला, तो तूने मुझे ये भाषण सुना दिया, छोड़ यार, तेरा मूड है तो ला आज फिर से चूत में ही डालता हूँ।

स्नेहा बोली- यह मैं अपनी नहीं, अलका की बात कर रही हूँ। उसे आपका लंड चाहिए अपनी चूत में डलवाने के लिए।

अब मैं चौंका- क्यूँ मैसी सहब नहीं हैं क्या अलका के लिए ?

स्नेहा बोली- यही मैंने अलका से कहा, तो अलका बोली कि मैसी साहब रोज शराब के नशे में आते हैं और बिस्तर पर आते ही वे मेरी कभी नहीं सुनते, सिर्फ पीछे से ही लग जाते हैं। यानि मेरी गांड में अपना लंड डालकर अपना झड़ा लेते हैं और सो जाते हैं। अब अपनी चूत की खुजली लेकर मैं किसके पास जाऊँ ? पता है, अभी कल मैंने आपसे बाजार से जो सामान मंगवाया है ना, वह भी इनके घर का ही है। मैसी साहब ने अपनी तनख्वाह फिर शराब में उड़ा दी है, और बाजार में अब कोई उन्हें राशन भी नहीं दे रहा है।

अलका को चोदने की बात करके स्नेहा ने मेरी तबियत हरी कर दी थी सो उसे अब उनका

घर कैसे चलेगा ? इस विषय पर उसे क्यों भटकने देता । लिहाजा मैंने उससे कहा- मुझसे चुदवाने के लिए तुमसे अलका ने ही कहा है क्या ?

स्नेहा बोली- नहीं, उसने कहा कि तुम्हारी जोड़ी अच्छी है, तुम जब चाहो जवाहरजी गांड में करते हैं और गांड मारने के बाद भी तुम्हारा झड़ाते हैं, काश मेरे पप्पू को भी एसी बुद्धि मिल जाए ।

तब मैंने उसे कहा- अलका, मैसी साहब को तुम बोलो ना, तब शायद वो समझें ।

अलका बोली- कोई दिन ऐसा नहीं होता जब मैं उन्हें चूत में डालने को नहीं बोलती हूँ, पर वो मेरी बात सुनते ही नहीं हैं । लिहाजा मुझे ऐसे तड़प के ही जीना पड़ रहा है ।

तब अलका की परेशानी मुझसे देखी नहीं गई और मैंने कहा- यदि तुम्हें अपनी चूत में लंड डलवाए बिना चैन नहीं मिलेगा तो बताओ मैं जवाहर से बात करूँ क्या ?

आपको पता है जस्सूजी, मेरी बात सुनकर अलका घबरा गई और बोली- नहीं, यह आजू बाजू का मामला है, कहीं किसी को पता चल गया तो बहुत गड़बड़ हो जाएगी ।

मैंने उसे कहा- देख अलका, ऐसी बातें मैं जस्सूजी को छोड़कर और किसी से नहीं करती, तो यदि इस मामले में तुझे मेरा सहयोग चाहिए तो मैं इसके लिए सिर्फ जस्सूजी को ही बोल सकती हूँ । और जस्सूजी पर तू भरोसा रख, वो तेरी भावनाओं का पूरा सम्मान करेंगे व यह बात किसी को पता नहीं चलने देंगे । मेरे इतना बोलने के बाद अलका मानी और आपसे पूछने को बोली है । अब बताइए, मैंने ठीक किया ना ?

मेरी इच्छा हो रही थी कि खुशी से स्नेहा का पैर पकड़ लूँ, आखिर वह मेरे लिए एक अदद माल को भोगने की व्यवस्था जो कर रही है । पर मैंने खुद पर कंट्रोल किया और भरे गले से कहा- तुम कितनी महान हो स्नेहा । कितना दर्द है तुममें परायों के लिए भी ।

स्नेहा बोली- बस-बस। पर ये ध्यान रखिएगा कि अलका को सिर्फ़ एक बार ही चोदना है, नहीं तो आप कहीं मुझे छोड़कर उसके पीछे ही मत पड़ जाइएगा।

मैंने स्नेहा को पटाते हुए कहा- अरे जब उसका मिस्टर ही उसे नहीं चोदता है तो मैं कहाँ उसके लिए अपनी इस हीरे का दिल दुखाऊँगा। जो ऐसी बात सिर्फ़ अपने आदमी से करती है इसलिए अपने आदमी को ही अपनी सहेली को चोदने कह रही है।

वह बोली- अरे, आपकी थोड़ी सी मदद से उसका मन अच्छा हो जाएगा ना। अलका ने बताया है कि अपने शरीर की भूख मिटाने के लिए वह कई लोगों को इशारा कर चुकी है यह जानते हुए भी कि यह एक नया खतरा हो सकता है, पर क्या करे मजबूर है बिचारी। अब मेरा मन स्नेहा को ईनाम देने करने लगा, सो मैंने उसके होंटो से चिपककर लंबा किस किया। इस दौरान मेरे हाथ उसके निप्पल, फिर उसके उरोजों को हल्के से दबाते रहे।

अब स्नेहा भी मूड में आ गई और अपने पूरे कपड़े उतारने के बाद मेरे कपड़े भी उतरवाए व मेरे तने हुए लंड को हाथ में पकड़कर बोली- ये अलका के पीछे पड़ जाएं, तब भी तू नहीं मानना। अलका की चूत में दोबारा जाने के लिए खड़े ही मत होना, मेरा प्यारा-प्यारा गुड्डू। ऐसा बोलकर उसने मेरे लंड को अपने मुँह में भर लिया।

स्नेहा का अपने प्रति प्यार और समर्पण देखकर मैं गद्गद हो गया और अपना लौड़ा छुड़ाकर मैं उसकी चूत तक पहुँचा और चूत चाटने लगा। बहुत प्यार से की जा रही चूत की चटाई ने स्नेहा पर जादू कर दिया और वह अपने पूरे जोश से उछलने लगी। मुझे उसकी चूत के पानी का हल्का सा स्वाद महसूस भी हो रहा था।

तभी स्नेहा बोली- अपना लौड़ा घुसेड़ो जस्सू। फाड़ दो मेरी चूत को।

मैंने अब उसकी चूत के छेद में जीभ घुमाने के बाद ऊपर की फली को चूसा, फिर चूत के

ऊपरी हिस्से से जीभ को नाभि पर लाया, और नाभि में जीभ डालकर अंदर तक घुमाया, अब जीभ को पेट से रगड़ते हुए वक्ष पर लाया। मेरे हाथ दोनों बूब्स पकड़े हुए थे और जीभ से निप्पल को आगे पीछे कर रहा था।

अब स्नेहा का सब्र जवाब दे गया और उसने मेरे लंड को पकड़कर चूत की ओर खींचा। अब मैं उसके गले पर जीभ लहराते हुए टुड्डी फिर उसके होंठ पर अपने होंठ रखकर चूसने लगा और लौड़े को अपने हाथ में पकड़ कर उसकी चूत की ऊपरी फली से रगड़ते हुए छेद में लाया। चूत का पानी बहकर बाहर तक आ गया था इसलिए मेरा लौड़ा छेद पर रखते साथ ही अंदर हो गया।

लौड़े के चूत में घुसते ही स्नेहा उछलने लगी और मैंने भी शाट लगाना शुरू कर दिया। आज वह बहुत ज्यादा गर्म हो गई थी, सो उसका फव्वारा जल्दी ही छूट गया। तुरंत बाद ही मेरा भी निकल गया। अब बिस्तर पर हम दोनों नंगे ही पस्त पड़े थे।

स्नेहा बोली- तो अलका को तैयार रहने कह दूँ ना ?

मैं बोला- स्नेहा मैं तुम्हारा हूँ, तुम्हारी जैसी मर्जी हो वैसा कर लो। मैं उफ भी नहीं करूँगा।

स्नेहा मेरे गले में हाथ डालकर मुझसे चिपक गई, और बोली- ओह थैंक्स मेरे प्यारे-प्यारे जस्सू।

ऊपर से तो मैं चोदने का मौका दिलाने वाली अपनी बीवी के सामने बहुत सीधा बनकर उसका आभार ले रहा था, मानो उसके लिए मैं किसी बहुत मुश्किल काम को करने जा रहा हूँ, पर अंदर ही अंदर मेरे मन में खुशी के लड्डू फूट रहे थे।

वाह, स्नेहा के कारण ही मुझे अलका चोदने को मिल रही है।

अब मैंने अलका को कैसे चोदा यह आपको कहानी के अगले भाग में बताऊँगा ।
पर यह कहानी आपको कैसी लगी इस बारे में कृपया मुझे बताएँ ।

jawaherjain@yahoo.com

2966

Other stories you may be interested in

मेरा सच्चा दोस्त बाबा : एक गे स्टोरी

दोस्तो, आपका अन्तर्वासना सेक्स स्टोरीज पे स्वागत है. मैं दीपक आप सभी को प्रणाम करता हूँ. सबसे पहले मैं अपने बारे में आपको बता दूँ. मैं 5 फुट 4 इंच के कद का हूँ और मेरा लंड 6 इंच का [...]

[Full Story >>>](#)

टीचर की यौन वासना की तृप्ति-12

इस पोर्न स्टोरी में अब तक आपने पढ़ा कि मैं नम्रता को अपने घर की खिड़की से घोड़ी जैसी बना कर उसकी गांड में लंड पेल रहा था. अब आगे : नम्रता ने अपने हाथों को खिड़की से टिकाकर अपने जिस्म [...]

[Full Story >>>](#)

दोस्त की जुगाड़ भाभी की डबल चुदाई

मेरे प्यारे दोस्तो, कैसे हो आप सब ... मैं आपका दोस्त शिवराज एक बार फिर से एक सच्ची घटना लेकर आया हूँ. आप सबका जो प्यार मुझे मिला, वो ऐसे ही देते रहना. इस बार मैं आपको एक हसीन हादसा, [...]

[Full Story >>>](#)

टीचर की यौन वासना की तृप्ति-11

इस सेक्सी स्टोरी में अब तक आपने पढ़ा कि नम्रता मेरे साथ मेरे घर आ चुकी थी और हम दोनों मेरे घर के बेडरूम में चुदाई के पहले का खेल खेलने लगे थे. अब आगे : फिर मैंने उसके पैरों के [...]

[Full Story >>>](#)

भाभी के साथ मजेदार सेक्स कहानी-2

मेरी सेक्स की कहानी के पहले भाग भाभी के साथ मजेदार सेक्स कहानी-1 अब तक आपने पढ़ा कि मेरी बिल्लिंग में रहने वाली पारुल भाभी का दिल मुझ पर आ गया था. हम दोनों में चुदाई छोड़ कर सब कुछ [...]

[Full Story >>>](#)

